



14. क इदं दुष्करं कुर्यात्



ई.स. पूर्व चौथी शताब्दी में मगध में नंदवंश का राज्य था। मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में जन्म लेनेवाले विष्णुगुप्त ने नंद के अत्याचारी शासन का अन्त किया। ये विष्णुगुप्त तक्षशिला विद्यापीठ में राजनीतिशास्त्र के आचार्य थे। व्यवसाय से शिक्षक, ऐसे उस राजनीतिशास्त्र के पंडित ने खंडित राज्यों को अखंड बनाने के लिए तथा अत्याचार से पीड़ित प्रजा को अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए सक्रिय राजनीति करते हुए नंदवंश के अत्याचारी शासन का अन्त किया। सामान्य परिवार में जन्म लेनेवाले चन्द्रगुप्त नामक बालक को आचार्य कौटिल्य ने राजनीति का पाठ पढ़ाया। अपनी अति कठिन परीक्षा को उत्तीर्ण करनेवाले इस सुयोग्य शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध के राजसिंहासन पर राजा के रूप में स्थापित किया। इस ऐतिहासिक घटना को कथावस्तु बनाकर, विक्रम की सातवीं से नवीं शताब्दी के बीच हुए विशाखदत्त नामक संस्कृत कवि ने मुद्राराक्षस नामक एक नाटक रचा है। सात अंक वाले इस नाटक के प्रथम अंक में से यह दृश्य पसंद कर, उसे सम्पादित कर पाठ के रूप में यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

नंदराजा का राक्षस नामक एक अमात्य था। वह अति सज्जन, वफादार और प्रजावत्सल था। नंदवंश के राज्य का अन्त होते ही अमात्य राक्षस स्वयं पदभ्रष्ट हो जाते हैं। साथ ही छद्म वेश धारण कर अपरिचित स्थान पर चले जाते हैं। अपने कर्तव्य और देशहित के लिए प्रसिद्ध अति निष्ठावान इस अमात्य को आचार्य चाणक्य अपने पक्ष में सम्मिलित कर, मगध में नव प्रस्थापित चन्द्रगुप्त के अमात्य के रूप में नियुक्त करना चाहते हैं। अतः उनका (राक्षस का) मन (विचार) जानने के लिए आचार्य चन्दनदास नामक श्रेष्ठी को बुलाते हैं। चन्दनदास अमात्य राक्षस का अन्तरंग मित्र था। उन्होंने अमात्य राक्षस के परिवार को गुप्त रूप से अपने घर संरक्षण प्रदान किया था। चाणक्य को जब इस तथ्य का पता चलता है तब वे चन्दनदास को बुलाते हैं और अमात्य राक्षस से मिलने (मिलवाने) की इच्छा प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पाठ में इसी संदर्भ में चाणक्य और चन्दनदास के साथ हुए संवाद को प्रस्तुत किया गया है।

यहाँ चन्दनदास की राक्षस के प्रति वफादारी और मित्रता का सुन्दर निरूपण किया गया है। अपने मित्र और उनके परिवार की रक्षा के लिए चन्दनदास स्वयं अपना और अपने परिवार का बलिदान देने के लिए तैयार हो जाते हैं। मित्र प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं, यह सिद्ध कर देते हैं। मित्र के प्रति चन्दनदास की भावना को देख चाणक्य प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। संवाद में आनेवाले वाक्यों में प्रस्तुत विध्यर्थ कृदन्त के रूपों का भी अभ्यास करना है।

चाणक्यः - (स्वशिष्यं प्रति) वत्स, श्रेष्ठी चन्दनदासः अत्र आनेतव्यः।

शिष्यः - यदाज्ञापयति उपाध्यायः।

(इति निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह पुनः प्रविश्य)

चन्दनदासः - (स्वगतम्) चाणक्यः यदा आह्वयति तदा निर्दोषस्य अपि शङ्का वर्धते किं पुनः जातदोषस्य। अत एव मया अमात्यराक्षसस्य गृहजनोऽन्यत्र प्रेषितः। मम तावत् यद्भवति तद्भवतु नाम।

शिष्यः - भोः श्रेष्ठिन् ! इतः इतः।

चन्दनदासः - अयमागतोऽस्मि। (उभौ परिक्रामतः।)

शिष्यः - उपाध्याय, अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।

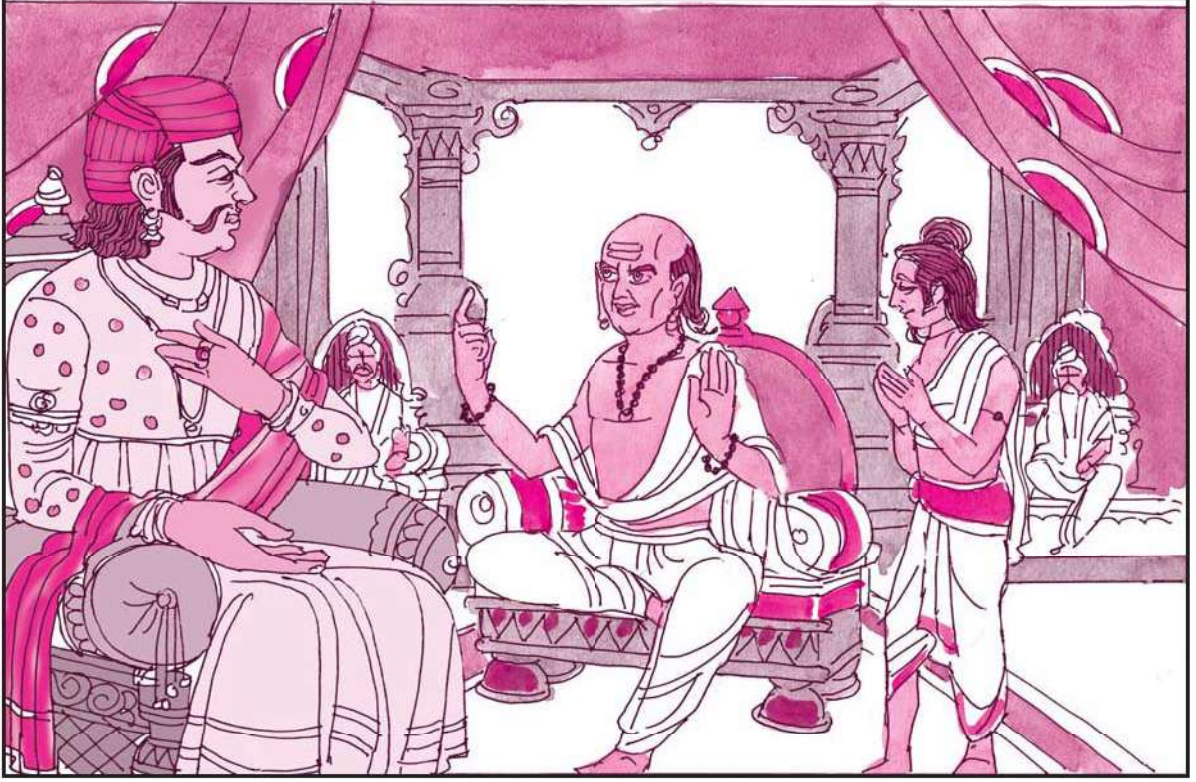
चन्दनदासः - (उपसृत्य) जयतु जयत्वार्यः।

चाणक्यः - श्रेष्ठिन्, स्वागतं ते। इदमासनम्, तत्र स्थातव्यम्।

चन्दनदासः - यदार्य आज्ञापयति। (उपविष्टः।)

चाणक्यः - अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः वः।

चन्दनदासः - (स्वगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) आर्य ! अथ किम्, आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वाणिज्या।



- चाणक्यः** - भोः श्रेष्ठिन् ! अपि कदाचित् चन्द्रगुप्तस्य दोषान् पूर्वनृपतेः नन्दस्य गुणान् अधुना स्मरन्ति प्रकृतयः ?
- चन्दनदासः** - शान्तं पापम् । शारदनिशासमुदगतेन पूर्णिमाचन्द्रेण अधिकं नन्दन्ति प्रकृतयः ।
- चाणक्यः** - भोः श्रेष्ठिन् ! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति प्रकृतयः ।
- चन्दनदासः** - आज्ञापयतु आर्यः । किं कियत् च अर्थजातम् अस्माज्जनादिष्यते ।
- चाणक्यः** - भोः श्रेष्ठिन्, चन्द्रगुप्तराज्यमिदं, न नन्दराज्यम् । अर्थः तु नन्दाय एव रोचते स्म, चन्द्रगुप्तस्य तु प्रजानां परिक्लेशाभावे एव रुचिः ।
- चन्दनदासः** - (सहर्षम्) अनुगृहीतोऽस्मि ।
- चाणक्यः** - स च परिक्लेशाभावः कथमाविर्भवतीति न प्रष्टव्यम् ।
- चन्दनदासः** - आज्ञापयतु आर्यः ।
- चाणक्यः** - संक्षेपतः नृपतिं प्रति अविरोद्धा वृत्तिः वर्तितव्या ।
- चन्दनदासः** - कः पुनः अधन्यो नृपतेः विरुद्धमाचरति ।
- चाणक्यः** - भवानेव तावत् प्रथमः ।
- चन्दनदासः** - शान्तं पापम् शान्तं पापम् । कीदृशस्तृणानाम् अग्निना सह विरोधः ।
- चाणक्यः** - अयम् ईदृशः विरोधः यत् त्वमद्यापि राजविरोधिनः अमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहम् अभिनीय रक्षसि ।
- चन्दनदासः** - आर्य, अलीकमेतत्, केनापि अनभिज्ञेन आर्यस्य एतत् निवेदितम् ।
- चाणक्यः** - भोः श्रेष्ठिन् ! अलमाशङ्कया । भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणां गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति । ततः तत्प्रच्छादनमेव दोषमुत्पादयति ।
- चन्दनदासः** - एवं नु इदम् । तस्मिन् समये अमात्यराक्षसस्य गृहजनः मम गृहे आसीत् ।
- चाणक्यः** - प्रथमम् अनृतम्, इदानीम् आसीत् इति परस्परविरुद्धे वचने ।
- चन्दनदासः** - एतावदेव अस्ति मे वाक्छलम् ।

- चाणक्यः** - भोः श्रेष्ठिन् ! चन्द्रगुप्तस्य राज्ये अपरिग्रहः छलानाम् । तत् समर्पयितव्यः राक्षसस्य गृहजनः । अच्छलेन भवितव्यम् भवता ।
- चन्दनदासः** - आर्य ! ननु विज्ञापयामि, तस्मिन् समये आसीत् मम गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनः ।
- चाणक्यः** - अथ इदानीं क्व गतः ।
- चन्दनदासः** - न जानामि कुत्र गतः ।
- चाणक्यः** - कथं न जानासि नाम । भोः श्रेष्ठिन् चन्दनदास ! राजविरोधिषु तीक्ष्णदण्डः नृपतिः चन्द्रगुप्तः । सः न मर्षयिष्यति राक्षसकलत्रस्य प्रच्छादनं भवतः । तत् रक्षितव्यं परकलत्रेण आत्मनः कलत्रं जीवितं च ।
- चन्दनदासः** - आर्य, किं मे भयं दर्शयति भवान् । सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनः असन्तम् ।
- चाणक्यः** - चन्दनदास, एष एव ते निश्चयः ।
- चन्दनदासः** - बाढम्, एष मे स्थिरः निश्चयः ।
- चाणक्यः** - (स्वगतम्) साधु चन्दनदास ! साधु ।
- सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः ।
क इदं दुष्करं कुर्यात् इदानीं शिबिना विना ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) **चाणक्यः** पाटलिपुत्र के महामंत्री कौटिल्य का एक नाम **वत्सः** पुत्र, शिष्य **चन्दनदासः** इस नाम का एक धनवान व्यापारी **उपाध्यायः** गुरु (जिसके पास जाकर अध्ययन किया जाए, उसे उपाध्याय कहा जाता है ।) **गृहजनः** घर का व्यक्ति, अपना आदमी **प्रसादः** कृपा, प्रसन्नता **अर्थः** धन, रुपया-पैसा **अपरिवर्तेशः** क्लेश-दुःख का अभाव, दुःख न हो ऐसी स्थिति **अधन्यः** भाग्यहीन, अभागा, दुर्भाग्यशाली व्यक्ति **अमात्यराक्षसः** इस नाम का राजा नंद का महामंत्री **आर्यः** श्रेष्ठ व्यक्ति, प्रतिष्ठित व्यक्ति, महानुभाव (किसी व्यक्ति को सम्मान से बुलाने या सम्बोधित करने के लिए संस्कृत में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । कहा गया है कि - कर्तव्यमाचरन् कर्म अकर्तव्यमनाचरन् । तिष्ठति प्रकृताचारे स वै आर्य इति स्मृतः ॥ अर्थात् जिस व्यक्ति का जो कर्तव्य कर्म हो, उसका वह आचरण करता हो और जो अकर्तव्य हो उसका आचरण न करता हो इस प्रकार जो अपने आचरण में सदैव स्थिर रहता है उसे 'आर्य' कहा जाता है ।) **अनभिज्ञेन** अज्ञानी, अपरिचित, न जानने वाला व्यक्ति **चन्द्रगुप्तः** चाणक्य का शिष्य (नंदवंश का नाश कर पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरूढ़ होने वाला राजा) **पौरः** (पुर) शहर में रहने वाले, शहरीजन, नागरिक

(स्त्रीलिङ्ग) **वाणिज्या** आजीविका, व्यापार, धंधा **प्रकृतिः** (राजा की) प्रजा, जनता **वृत्तिः** व्यवहार

(नपुंसकलिङ्ग) **अलीकम्** असत्य, झूठ, गलत **प्रच्छादनम्** छिपाया जाए वह **अनृतम्** असत्य, झूठ **कलत्रम्** पत्नी **जीवितम्** जीवन **गेहम्** घर

सर्वनाम : **उभौ** (पुं) दोनों **इदम्** (नपुं.) यह **अस्मात्** (पुं, नपुं.) इसलिए, इसमें से **भवताम्** तुम्हारा, आपका **कः** (पुं.) कौन **एतत्** (नपुं.) यह

विशेषण : **अखण्डिता** (**वाणिज्या**) खंडित न हो ऐसा (व्यापार-वाणिज्य) **शारदनिशासमुद्गतेन** (**पूर्णिमाचन्द्रेण**) शरद ऋतु की रात में निकले हुए (पूर्णिमा के चाँद के द्वारा) **पूर्वनृपतेः** (**नन्दस्य**) पहले के राजा (नंद) का **कियत्** (**अर्थजातम्**) कितना, (धन), कितने प्रमाण (अनुपात) में (धन-सम्पत्ति) **प्रीताभ्यः** (**प्रकृतिभ्यः**) प्रसन्न हुई प्रजा के पास से **अविरुद्धा** (**वृत्तिः**) अनुकूल (व्यवहार) **कीदृशः ईदृशः** (**विरोधः**) कैसा ऐसा (विरोध) **भीताः** (**पूर्वराजपुरुषाः**) भयग्रसित, डरे हुए (पहले के राजपुरुष) **परस्परविरुद्धे** (**वचने**) परस्पर विरोधी (वचन) **तीक्ष्णदण्डः** (**नृपतिः**) जिसका दंड उग्र है वह (राजा), भयंकर सजा देने वाला (राजा) **स्थिरः** (**निश्चयः**) टिका रहने वाला, स्थिर रहने वाला (निश्चय) **सुलभेषु** (**अर्थलाभेषु**) सरलता से प्राप्त हो जाने वाले, सभी को प्राप्य होने वाले (धन के लाभ में)

क इदं दुष्करं कुर्यात्

अव्यय : प्रति की तरफ, की ओर **अत एव** इस कारण से ही, इसीलिए **अन्यत्र** दूसरी जगह, अन्य स्थान पर **इतः** इस तरफ से, इधर से **अपि** संभावना के अर्थ के संदर्भ को बताने के लिए वाक्य में इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है। **अथ किम्** तो क्या, इसी तरह, हाँ **संक्षेपतः** संक्षेप में **अद्यापि** आज भी **अलम्** बस, पर्याप्त, समर्थ **नु** निश्चितता का अर्थ बताने के लिए प्रयुक्त होता है। **कुत्र** कहाँ **कथम्** किसलिए, किस कारण से **बाढम्** बराबर, ठीक (स्वीकार का अर्थ बताने वाला अव्यय) **साधु** ठीक, बराबर **कीदृशः** कैसा **इदृशः** ऐसा

समास : स्वशिष्यम् (स्वस्य शिष्यः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। जातदोषस्य (जातः दोषः यस्य सः, तस्य - बहुव्रीहि)। गृहजनः (गृहस्य जनः - षष्ठी तत्पुरुष)। वृद्धिलाभाः (वृद्धेः लाभः, ते - षष्ठी तत्पुरुष)। अखण्डिता (न खण्डिता - नञ् तत्पुरुष)। पूर्वनृपतेः (पूर्वस्य नृपतिः, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। शारदनिशासमुद्गतेन (शारदस्य निशा शारदनिशा (षष्ठी तत्पुरुष), शारदनिशायां समुद्गतः, तेन - सप्तमी तत्पुरुष)। पूर्णिमाचन्द्रेण (पूर्णिमायाः चन्द्रः, तेन - षष्ठी तत्पुरुष)। प्रतिप्रियम् (प्रतिगतं प्रियम्)। चन्द्रगुप्तराज्यम् (चन्द्रगुप्तस्य राज्यम् - षष्ठी तत्पुरुष)। नन्दराज्यम्। (नन्दस्य राज्यम् - षष्ठी तत्पुरुष)। परिक्लेशाभावे (परिक्लेशस्य अभावः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। अविरुद्धा (न विरुद्धा - नञ् तत्पुरुष)। अधन्यः (न धन्यः - नञ् तत्पुरुष)। राजविरोधिनः (राज्ञः विरोधिनः - षष्ठी तत्पुरुष)। स्वगृहम् (स्वस्य गृहम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। अनभिज्ञेन (न अभिज्ञः, तेन - नञ् तत्पुरुष)। पूर्वराजपुरुषाः (राज्ञः पुरुषाः, राजपुरुषाः (षष्ठी तत्पुरुष), पूर्वे च ते राजपुरुषाः - कर्मधारय)। देशान्तरम् (अन्यः देशः - कर्मधारय)। अनृतम् (न ऋतम् - नञ् तत्पुरुष)। परस्परविरुद्धे (परस्परस्मात् विरुद्धम्, ते - पञ्चमी तत्पुरुष)। वाक्छलम् (वाचः छलम् - षष्ठी तत्पुरुष)। अपरिग्रहः (न परिग्रहः - नञ् तत्पुरुष)। तीक्ष्णदण्डः (तीक्ष्णः दण्डः यस्य सः - बहुव्रीहि)। नृपतिः (नृणाम् पतिः - षष्ठी तत्पुरुष)। राक्षसकलत्रस्य (राक्षसस्य कलत्रम्, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। परकलत्रेण (परस्य कलत्रम्, तेन - षष्ठी तत्पुरुष)। असन्तम् (न सत्, तम् - नञ् तत्पुरुष) अर्थलाभेषु (अर्थस्य लाभाः, तेषु - षष्ठी तत्पुरुष)। परसंवेदने (परस्य संवेदनम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्तः (सं.भू.कृ.) निष्क्रम्य निकलकर **प्रविश्य** प्रवेश करके **अभिनीय** ले जाकर **निक्षिप्य** रखकर (**क.भू.कृ.**) **प्रेषितः** भेजा, भेज दिया **आगतः** आया हुआ, आया **उपविष्टः** बैठा, बैठा हुआ **अनुगृहीतः** अनुग्रह किया हुआ **निवेदितम्** निवेदन किया, निवेदन किया हुआ **भीताः** भय ग्रसित, डरा हुआ **गतः** गया, गया हुआ (**वि.कृ.**) **आनेतव्यः** लाना चाहिए, ले आओ, लाओ **स्थातव्यम्** बैठना चाहिए, बैठो **प्रष्टव्यम्** पूछना चाहिए, पूछने योग्य **वर्तितव्या** व्यवहार करना चाहिए **समर्पयितव्यः** समर्पित कर देना चाहिए, समर्पित करने योग्य **भवितव्यम्** होना चाहिए, होने लायक **रक्षितव्यम्** रक्षा करनी चाहिए, रक्षा करने योग्य

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) जि (जयति) जीतना **नन्द (नन्दति)** खुश होना, प्रसन्न होना **व्रज् (व्रजति)** जाना आ + ह्वे > ह्व्य् (आह्वयति) बुलाना

(आत्मनेपदी) वृध् (वर्धते) बढ़ना, वृद्धि प्राप्त करना

दशम गण (परस्मैपदी) मर्ष् (मर्षयति) क्षमा करना, माफ करना

विशेष

1. शब्दार्थ : श्रेष्ठी सेठ, साहूकार **स्वगतम्** स्वयं को ही सुनाई दे इस तरह से बोली जाने वाली उक्ति, मन ही मन में बोली जाने वाली उक्ति **जातदोषस्य** जिनसे दोष उत्पन्न हुआ है उसको **मम तावत् यद्भवति तद्भवतु** नाम मेरा जो होना है उसे होने दो (**उभौ परिक्रामतः।** दोनों घूमते हैं।) (कोष्ठक में दिए गए वाक्य नाटककार द्वारा दी गई रंग सूचनाएँ हैं। नाटक का अभिनय करते समय पात्र इन सूचनाओं के अनुसार अभिनय करता है।) **प्रचीयन्ते** बढ़ रहा है **संव्यवहाराणाम्** खरीदना और बेचना, व्यापार **वृद्धिलाभाः** व्यापार वृद्धि के लाभ (वृद्धि का अर्थ ब्याज भी होता है।) (**प्रकाशम्**) स्वगत उक्ति के उपरान्त सब सुन सकें उस तरह से बोला जाने वाला संवाद (सामान्यतः नाटक में सभी संवाद 'प्रकाशम्' होते हैं, परन्तु स्वगत उक्ति बोली जाने के तुरन्त बाद पुनः जोर से संवाद (सुनाई दे इस तरह) बोलना शुरू करना हो तब (प्रकाशम्) ऐसी सूचना दी जाती है **आर्यस्य प्रसादेन** आप महानुभाव की कृपा से

प्रकृतयः अपि प्रजा भी, जनता भी **प्रतिप्रियम्** प्रिय के सामने किया गया प्रिय **अर्थजातम्** धन का समूह, धन का ढेर **ईष्यते** चाहा जा रहा है, प्रेम करते हो, इच्छा रखते हो **परिक्लेशाभावे** दुःख के अभाव में, क्लेश न होने में **सहर्षम्** हर्ष के साथ **कथमाविर्भवतीति** कैसे पैदा होता है, किस तरह से उत्पन्न होता है **अलमाशङ्कया** शंका मत करो, शंका करने की आवश्यकता नहीं है **देशान्तरं व्रजन्ति** अन्य देश में चले जाते हैं, जा रहे हैं **तत्प्रच्छादनमेव** तुम को छिपा दूँ **दोषमुत्पादयति** दोष उत्पन्न करता है, गुनाह पैदा करता है **वाक्छलम्** वाणी का छल-दोष, बहाना **छलानाम्** छल का, दोष का **अपरिग्रहः** संग्रह का अभाव, त्यागभाव **अच्छलेन** छल या दोष बिना रहने से, निर्दोष रहने से **भवता भवितव्यम्** आप को होना चाहिए, तुमको (आप को) बनना चाहिए **न मर्षयिष्यति** माफ नहीं करेंगे, क्षमा नहीं करेंगे **गेहे सन्तमपि** घर में हो तो भी **न समर्पयामि** समर्पित नहीं करूँ, सौंपूँ नहीं **किं पुनः असन्तम्** तो फिर (घर में) न हो उसका क्या **परसंवेदने** दूसरों के दुःख में, (अन्य) दूसरों की तकलीफ में **दुष्करम्** मुश्किल कार्य, कठिन काम **शिबिना विना** शिबि नामक राजा के अलावा (प्राचीन काल में एक शिबि नाम के राजा हुए। उन्होंने अपने यहाँ आश्रय लेने के लिए आए हुए पंडुक पक्षी को बचाने के लिए बाज पक्षी को अपने शरीर का मांस दे दिया था। जबकि यह प्रसंग उनकी परीक्षा के लिए था, जिसके विषय में राजा कुछ नहीं जानते थे।)

2. सन्धि : गृहजनोऽन्यत्र (गृहजनः अन्यत्र)। यद्भवति (यत् भवति)। तद्भवतु (तत् भवतु)। अयमागतोऽस्मि (अयम् आगतः अस्मि)। अस्माज्जनादिष्यते (अस्मात् जनात् इष्यते)। अनुगृहीतोऽस्मि (अनुगृहीतः अस्मि)। कथमाविर्भवतीति (कथम् आविर्भवति इति)। कीदृशस्तृणानाम् (कीदृशः तृणानाम्)। त्वमद्यापि (त्वम् अद्या अपि)। एष एव (एषः एव)। एष मे (एषः मे)। क इदानीम् (कः इदानीम्)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) चन्दनदासेन अमात्यराक्षसस्य गृहजनः कुत्र निर्वाहितः ? ☐
- (क) स्वगृहे (ख) अन्यत्र (ग) मित्रगृहे (घ) अरण्ये
- (2) नन्दाय किं रोचते स्म ? ☐
- (क) अर्थः (ख) प्रजाकल्याणम् (ग) युद्धम् (घ) धर्मवृद्धिः
- (3) तृणानाम् सह विरोधः कीदृशः ? ☐
- (क) अग्निम् (ख) अग्निना (ग) अग्नेः (घ) अग्निः
- (4) चन्दनदासः स्वगतं वदति, अहं तु । ☐
- (क) निर्दोषः (ख) साशङ्कः (ग) मुक्तदोषः (घ) जातदोषः
- (5) भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणां गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं । ☐
- (क) व्रजति (ख) व्रजतः (ग) व्रजन्ति (घ) व्रजन्ते
- (6) चाणक्यः यदा आह्वयति तदा अपि साशङ्कः भवति । ☐
- (क) निर्दोषः (ख) निर्दोषाः (ग) निर्दोषेन (घ) निर्दोषैः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

- (1) चाणक्यः स्वशिष्याय किं कथयति ?
- (2) चन्द्रगुप्ताय किं रोचते ?
- (3) भूपाः प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः किम् इच्छन्ति ?
- (4) भीताः राजपुरुषाः कुत्र गृहजनं निक्षिपन्ति ?

3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|-----------------|-------|----------------|-------|
| (1) निष्क्रम्य | | (2) निर्वाहितः | |
| (3) शङ्कनीयः | | (4) इष्टः | |
| (5) प्रष्टव्यम् | | (6) निक्षिप्य | |

4. समासप्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|-----------------|-------|-----------------|-------|
| (1) जातदोषः | | (2) वृद्धिलाभाः | |
| (3) नन्दराज्यम् | | (4) परकलत्रम् | |
| (5) देशान्तरम् | | | |

5. वचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

- | | | |
|----------------|------------|----------|
| (1) इच्छामि | | |
| (2) | | व्रजन्ति |
| (3) | परिक्रामतः | |
| (4) पराजेष्यति | | |

6. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(केन, कः, किम्, कीदृशम्, कस्य)

- (1) नन्दस्य अर्थसम्बन्धः प्रीतिजनकः।
- (2) एतत् प्रच्छादनदोषम् उत्पादयति।
- (3) अमात्यराक्षसः चन्द्रगुप्तं न पराजेष्यति।
- (4) शिष्यः चन्दनदासेन सह प्रविशति।

7. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

- (1) चाणक्य किस तरह चन्दनदास के प्रति अति आदर व्यक्त करते हैं ?
- (2) चाणक्य के मतानुसार नंद और चन्द्रगुप्त के राज्य में क्या अन्तर है ?
- (3) चाणक्य चन्दनदास को चन्द्रगुप्त का प्रथम विरोधी क्यों मानते हैं ?
- (4) चाणक्य चन्दनदास को किस तरह डराते हैं ?
- (5) राक्षस के परिवार को सौंपने के संदर्भ में चन्दनदास क्या उत्तर देते हैं ?
- (6) इस पाठ में मित्र की महिमा किस तरह उभर कर आती है ?

प्रवृत्ति

- विष्णुगुप्त-कौटिल्य के जीवन के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए।
- चाणक्य के प्रेरणादायी वचनों को अपनी पाठशाला में सुविचार के रूप में लिखिए।